

जैन संस्कृति में अहिंसा की भावना

डॉ० कुमारी शिल्पा

मनुष्य अपने सुख-शान्ति के लिए अहर्निश, उद्यमशील एवं प्रयत्नशील रहता है, फिर भी जबतक वह दूसरों की सुख-सुविधाओं पर ध्यान नहीं देगा, वह केवल अपने आप में स्वार्थी, आरामतलबी, अहंकारी और अर्थतोषी बनकर दूसरों की आवश्यकताओं की उपेक्षा करता रहेगा, दूसरे के अधिकारों को छीनता रहेगा, दूसरे के श्रम का शोषण करता रहेगा तबतक वह स्वयं जीवन में सुख-शान्ति प्राप्त नहीं कर सकेगा। अतः किसी भी व्यक्ति को सच्चे अर्थों में सुख-शान्ति सम्पन्न बनना है तो उसे मन-वचन-कर्मणा अहिंसा को स्वीकार करना होगा, क्योंकि इसके बिना शाश्वत-सुख एवं शांति की कल्पना नहीं की जा सकती है। यही कारण है कि संसार में मूर्धन्य मनीषियों ने सुख-शान्तिपूर्वक जीवन-यापन करने के लिए अहिंसा की खोज की थी जिसके अनुसार उनलोगों ने अपना जीवन जियो और जनमानस को भी अहिंसामय जीवन जीने की प्रेरणा दी। फलस्वरूप जनमानस ने भी अहिंसा धर्म को स्वीकार कर समाज में अमन-चमन स्थापित किया जिससे यह कहा जा सकता है कि अहिंसा मानव-जाति के ऊर्ध्वमुखी विराट् चिंतन का सर्वोत्तम विकास विन्दु है। यह लौकिक और अलौकिक दोनों प्रकार के मंगलमय जीवन का मूलाधार है, जिससे मानव सभ्यता के उच्च आदर्शों का सही-सही मूल्यांकन किया जा सकता है। परन्तु, इसके लिए अहिंसा को निर्मल आँख होना नितांत आवश्यक है। यदि अहिंसा न हो, तो मनुष्य न स्वयं अपने को पहचान सकेगा और न दूसरों को ही जान पायेगा। अतः पशुत्व से ऊपर उठने के लिए अहिंसा का आलम्बन लेना आवश्यक है।